आ कंठ में विराजो वीणा बजाने वाली।

आ कंठ में विराजो वीणा बजाने वाली।
आज्ञान रूपी मन को, पल में मिटाने वाली।।
आ कंठ में विराजो वीणा बजाने वाली।
एक हाथ में है वीणा, दूसरे में है कमल दल
शोभा अजब तुम्हारी महिमा बड़ी निराली।।
आ कंठ में विराजो वीणा बजाने वाली
अज्ञान रूपी मन को, पल में मिटाने वाली।
उड़ती तुम्हीं पवन सी लहराती हो गगन में
है श्वेत रंग तेरा, महिमा बड़ी निराली
आ कंठ में विराजो वीणा बजाने वालीए
अज्ञान रूपी मन को, पल में मिटाने वाली।
दुःख को मिटाने वाली, सुखमय बनाने वाली।
माँ ज्ञान धर्म बल को, पल में दिलाने वाली
आ कंठ में विराजो वीणा बजाने वाली
आज्ञान रूपी मन को, पल में मिटाने वाली।
आ कंठ में विराजो वीणा बजाने वाली। **- 2**